इखलास ऐ नियत

संपादक- मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

राहे अमल हिन्दी.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

1] इखलास ऐ नियत

आखिरत मे किसी नेक काम की जाहिरी शक्ल पर कोई इनाम नही मिलेगा, वहा तो सिर्फ वही काम बदले और सवाब का हकदार होगा जिसको अल्लाह की खुशी हासिल करने के लिये किया होगा, बडे से बडा नेकी का काम अगर इसलिये किया गया हे की दुसरे उससे खुश हो, या लोगो की निगाह मे उसका रूतबा बढे तो अल्लाह की निगाह मे उसका कोई रूतबा नही, आखिरत के बाजार मे उसकी कोई कीमत नही, ऐसा काम अल्लाह की तराजु मे खोटा बल्की झाली सिकका माना जायेगा, ना ऐसा ईमान वहा काम आयेगा और ना ऐसी इबादत, जब ये हकीकत हे और इसके हकीकत होने मे कोई शुबहा नही हे तो हमे लोगो को दिखाने और अपनी शोहरत के लिये काम करने से होशियार और चौकन्ना रहना होगा वरना

सारी मेहनत बरबाद हो जायेगी और बरबादी की खबर हमे वहा होगी जहा आदमी कोडी कोडी का मोहताज होगा. (बुखारी, उमर रदी, मुस्लिम, अबू हुरैरा रदी, खुलासा)

2] नियत के मुताबिक सवाब

ये हदीस इन्सानो और उसकी जिन्दगी सुधरने के लिये बडी अहम हे, हुजूरﷺ के इरशाद का मतलब ये हे के नेक कामो का फल नियत्तो के हिसाब के मुताबिक मिलेगा, नियत ठीक हे तो उसका सवाब मिलेगा, वरना नही मिलेगा, कोई काम चाहे वो देखने मे नेक और अच्छा हो, उसका बदला आखीरत मे शिर्फ उसी सूरत मे मिलेगा जबकी वो अल्लाह को खुश करने के लिये किया गया हो, अगर उस नेक काम का मकसद दुनिया हासिल करना हे तो आखिरत मे उसके कोई काम ना लगेगी, इस की हकीकत को आपﷺ ने हिजरत* की मिसाल देकर साफ कर दिया के देखो हिजरत कितना बडा नेकी का काम हे, लेकिन अगर किसी ने अल्लाह और उसके रसूलﷺ के लिये नही, बल्के अपने किसी दुनियवी मकसद को पूरा करने के

लिये हिजरत करता हे, तो आखिरत मे इस हिजरत का जो जाहीर मे बहुत बडी नेकी हे, उसका कुछ सवाब नही मिलेगा, बल्की उल्टा उस पर धोकेबाजी और फरेब का मुकद्दमा कायम होगा. (बुखारी, उमर रदी, मुस्लिम, अबू हुरैरा रदी, खुलासा)

*हिजरत का मतलब की आदमी अपने धर्म को बचने के लिये अपना घर बार और पूरा परिवार और अपना देश छोड कर किसी दूसरी जगह चला जाए जहा वो अपने धर्म पर कायम रह सके.